हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, सोमवार 21 अप्रैल 2025

11 19 जिलों को किया कवर, 30 तक सभी 22 जिलों में...

12 तारों से निकली चिंगारी से जलकर राख हुई साढ़े पांच एकड़ में खड़ी...

लोक गायन

लोक संगीत का तात्पर्य पारंपरिक संगीत और लोक संगीत की आधुनिक धारणा दोनों से हो सकता है। हरियाणा प्रदेश में लोक गायन की अलग-अलग शैलियां प्रचलित हैं जैसे घरवा गायन, झूलना, पटका, रसिया, आदि। ये शैलियां राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के लोक गायकों द्वारा गाए जाने या प्रस्तुत किए जाने के तरीके में एक-दूसरे से भिन्न हैं। इसी तरह गाथाएं लोक संगीत का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उनमें आमतौर पर ऊपर बताए गए गीतों की तरह लोक कविता के गीतात्मक गुण नहीं होते। वे समुदाय का अलिखित इतिहास हैं।

हरिभूमि

रोहतक, सोमवार, 21 अप्रैल 2025

लुप्त होती प्रदेश की अनमोल विरासत रागनी

कला-संस्कृति

डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा की लोकसंस्कृति में रागनी एक महत्वपूर्ण कला है, जो समय के साथ धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। यह न केवल मनोरंजन का माध्यम रही है, बल्कि सामाजिक संदेश देने, वीर रस जगाने और लोक इतिहास को संजोने का एक प्रभावशाली ज़रिया भी रही है। हरियाणा की रागनी न केवल मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम रही है, बल्कि समाज सुधार की दिशा में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह लोककला सिर्फ़ संगीत नहीं, बल्कि एक आंदोलन रही है, जिसने लोगों को जागरूक किया, बुराइयों के खिलाफ खड़ा किया और समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया। हरियाणवी रागनी लोकसंस्कृति का अभिन्न अंग रही है और इसके प्रचार-प्रसार में जाहरवीर कल्लू खां, अजीत सिंह गोरखपुरिया, दयाचंद लांबा, राजेंद्र खड़खड़ी, जसमेर खरकिया, सुरेंद्र भादू, सूरजभान बलाली, मामन खान, सतीश ठेठ, कविता कसाना के साथ-साथ और भी कई महान कलाकारों का योगदान रहा है। आज भी कई युवा कलाकार रागनी को आगे बढ़ा रहे हैं और इसे डिजिटल मंचों के माध्यम से नई ऊँचाइयों तक ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। हरियाणवी रागनी को जीवित रखने में संदीप सरगथलिया, वीर सिंह फौजी, धर्मवीर नागर, राजबाला, मास्टर छोटूराम बड़वा जैसे कई कलाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनकी मेहनत और समर्पण से यह लोककला आज भी जीवित है, हालाँकि इसे और संरक्षण और प्रोत्साहन की ज़रूरत है।

रागनी हरियाणवी लोकगीतों और कविताओं का एक विशिष्ट रूप है, जिसे मुख्य रूप से हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्सों में गाया जाता है। इसमें वीरता, प्रेम, भक्ति, सामाजिक मुद्दों और ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण किया जाता है। पहले यह कला अखाड़ों और मेलों में बहुत लोकप्रिय थी, जहां गायक अपनी आवाज़ और जोश के साथ लोगों को मंत्रमुग्ध कर देते थे। रागनी के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और समानता पर ज़ोर दिया गया। कई लोकप्रिय रागनियों में बाल विवाह, दहेज प्रथा और महिलाओं पर अत्याचारों का विरोध किया गया है। बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ जैसे संदेशों को रागनी ने जन-जन तक पहुंचाया।

हरियाणवी समाज में जातिगत भेदभाव को ख़त्म करने और समानता का संदेश देने में रागनी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कई प्रसिद्ध रागनियों ने बताया कि सभी मनुष्य समान हैं और कर्म को जाति से ऊपर रखना चाहिए। रागनी के माध्यम से शराब, जुए और अन्य नशों की लत से बचने के संदेश दिए गए। कलाकारों ने इन बुराइयों को जड़ से उखाड़ने के लिए प्रेरक गीत गाए। हरियाणा की ग्रामीण जनता के लिए रागनी एक ताकत बनी। इसमें किसानों की समस्याओं, मजदूरों के अधिकारों और सरकार से उनकी माँगों को जोरदार तरीके से उठाया गया। कई रागनियों में किसान आंदोलनों, फ़सल के सही दाम और सरकार की नीतियों पर सवाल उठाए गए हैं।

ब्रिटिश राज के दौरान रागनी स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक प्रभावशाली हथियार बनी। लोकगायक अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता में देशभक्ति की भावना भरते थे और अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का आह्वान करते थे। आज के दौर में भी रागनी समाज सुधार का माध्यम बनी हुई है। डिजिटल मीडिया और मंचों पर युवा कलाकार सामाजिक मुद्दों पर रागनी प्रस्तुत कर रहे हैं। हरियाणवी लोकसंस्कृति की पहचान रागनी समय के साथ लुप्त होती जा रही है। कभी गाँवों के चौपालों, मेलों और अखाड़ों में गूँजने वाली यह कला अब केवल कुछ पुराने कलाकारों और रसिकों तक सीमित रह गई है। इसके लुप्त होने के पीछे कई सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कारण ज़िम्मेदार हैं। पहले के समय में गाँवों में बैठकर बुज़ुर्ग अपनी अगली पीढ़ी को लोकगीत और रागनी सिखाते थे, लेकिन अब यह परंपरा समाप्त हो रही है। लोकगीतों और रागनी को नयी शैली में ढालने का प्रयास कम हुआ है, जिससे यह लोगों के लिए कम प्रासंगिक हो गई है। नवीन मनोरंजन साधनों टीवी, इंटरनेट और पॉप संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी लोककला से दूर होती जा रही है। आधुनिक संगीत उद्योग में रागनी को वह स्थान नहीं मिला जो अन्य संगीत शैलियों को मिला है। युवा पीढ़ी इसे करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित नहीं हो रही है।

> कभी गांवों की चौपालों, मेलों और अखाड़ों में गूंजने वाली यह कला अब केवल कुछ पुराने कलाकारों और रसिकों तक सीमित रह गई है। इसके लुप्त होने के पीछे कई सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कारण ज़िम्मेदार हैं। पहले के समय में गांवों में बैठकर बुज़ुर्ग अपनी अगली पीढ़ी को लोकगीत और रागनी सिखाते थे, लेकिन अब यह परंपरा समाप्त हो रही है। लोकगीतों और रागनी को नयी शैली में ढालने का प्रयास कम हुआ है, जिससे यह लोगों के लिए कम प्रासंगिक हो गई है। इस कला को संरक्षित करने के लिए कोई औपचारिक संस्थान या पाठ्यक्रम भी उपलब्ध नहीं हैं।

इस कला को संरक्षित करने के लिए कोई औपचारिक संस्थान या पाठ्यक्रम उपलब्ध नहीं हैं। रागनी को नए संगीत वाद्ययंत्रों और आधुनिक ध्वनि तकनीक के साथ प्रस्तुत किया जाए, ताकि यह युवाओं को भी आकर्षित कर सके। हरियाणवी फिल्म और म्यूजिक इंडस्ट्री में रागनी को स्थान दिया जाए। रागनी को रैप और हिप-हॉप जैसी आधुनिक शैलियों के साथ मिलाकर फ्यूज़न रागनी तैयार की जाए, जिससे यह युवाओं तक प्रभावी रूप से पहुंचे। हरियाणवी लोकसंस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग रागनी आज विलुप्ति के कगार पर है। मनोरंजन के आधुनिक साधनों के आगमन और बदलते सामाजिक परिवेश के कारण यह कला पिछड़ती जा रही है। यदि समय रहते इसके संरक्षण के प्रयास नहीं किए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को यह विरासत केवल किताबों में ही देखने को मिलेगी। स्कूलों और कॉलेजों में रागनी को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए, ताकि युवा पीढ़ी इसकी जड़ों से जुड़ सके। विश्वविद्यालयों में लोककला और संगीत की पढ़ाई के अंतर्गत रागनी पर शोध को बढ़ावा दिया जाए। बच्चों को पारंपरिक संगीत में रुचि दिलाने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। सरकार और सांस्कृतिक संस्थानों को लोक महोत्सवों में रागनी को विशेष स्थान देना चाहिए। यूट्यूब, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया के माध्यम से इसे युवाओं तक पहुँचाया जा सकता है। स्कूलों और कॉलेजों में रागनी की शिक्षा दी जानी चाहिए। लोक कलाकारों को आर्थिक और सामाजिक समर्थन दिया जाना चाहिए। रागनी केवल एक गीत शैली नहीं, बल्कि हरियाणा की संस्कृति की पहचान है। यदि इसे संरक्षित करने के लिए उचित क़दम नहीं उठाए गए, तो यह अमूल्य धरोहर धीरे-धीरे विलुप्त हो जाएगी।

अब समय आ गया है कि हम इसे फिर से लोकप्रिय बनाएं और इसकी समृद्ध परंपरा को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाएं। रागनी केवल लोकगायन नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने का सशक्त माध्यम है। यह सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाने, सुधार की ओर प्रेरित करने और बदलाव लाने की ताकत रखती है। अगर इसे सही दिशा में प्रोत्साहित किया जाए, तो यह समाज सुधार की एक मज़बूत नींव बन सकती है।

रागनी सिर्फ़ गीत नहीं, ये समाज की आवाज़ है!
लोककला हमारी पहचान है, इसे बचाना हमारी शान है!

कविता

संदीप शर्मा

खेल पुराणे कड़ै गए

बता रै बील्ले खेल्या करते, वैं खेल पुराणे कड़ै गए ।
बित्ती डंडा गोली कंचे, रोज उल्हाणे कड़ै गए ।

चौक पै टोफी बेच्या करता, वो ताऊ भोळा कड़ै गया
कित गए कलम दवात बता, कट्टे का झोळा कड़ै गया
तीन और दो का करा फैसला, यार बिचौला कड़ै गया
भाड मैं भूगडे भुन्या करता, वो दादा ढोला कड़ै गया
बिन्या लीतर् यां हान्डया करते, वैं सीम सिमाणे कड़ै गए

कित गया बड कित गया पीपळ,कित जाम्मण आळा मोर गया
कित गई कात्तर की गींडी, कित खेल वो घट्टाटोर गया
कित गई गाड्डी कित गए रहडू, कित वो कच्चा गोहर गया
कित गए हाळी कित गए पाळी, कित वो डांगर ढोर गया
कड़ै सिपाही चोर गया,ल्हुक के नैं डराणे कड़ै गए ।

बाग तलक जो फैले थे वैं, शीशम जांडी कड़ै गए
ऐडी ठा चढ चीज मिलै, वैं टांड और टांडी कड़ै गए
जेठ मैं पाणी सीळा रह वैं, बास्सण हांडी कड़ै गए
राम बरसतए उतर् या करते,वैं पूडे मांडी कड़ै गए
वैं माणस आंडी कड़ै गए,वैं टेम सुहाणे कड़ै गए ।

होया करदी सन्दीप कदे आडै,ऊँची हाट चुबार् यां की
कित गई प्यारे की साईकल जो,लदी रहै थी सार् यां की
छींटे दे-दे थळस्या करते,कित गई पाळ वैं गार् या की
कित पीत्तलके डेग गए कित, आग्य चली गई हार् यां की
कित का डंडा की जाळ गई,जोहडां मैं न्हाणे कड़ै गए ।

शक्तिपीठ

राजस्थान के करौली जिले के कैलादेवी गांव में स्थित शक्तिपीठ उत्तर भारत के करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। यहां विशाल मेला लगता है

सिद्ध शक्तिपीठ राज राजेश्वरी कैलादेवी मंदिर

धर्म

विकास खितौलिया

ततः कलियुगे प्राप्ते कैलो नामा भविष्यति ।
मम भक्तस्तस्य नामना भाव्या कैलेश्वरीत्यहम् ।।

प्राचीन ग्रन्थों, स्कन्दपुराण में माता के प्राकट्य एवं चरित्र की अनेक कथायें मिलती हैं । पूर्व में इस कैलादेवी मन्दिर में केला मां का यह श्री विग्रह कब और कहाँ से आया, इसका कोई प्राचीन लिखित लेख, अभिलेख या बीजक तो मिलता नहीं। हाँ, जनश्रुति तथा वृद्धजनों के आधार पर इस सिद्धपीठ की स्थापना के विषय में जो कुछ मैया केला रानी के चमत्कारों और उत्पति की अनेक किवदन्तियों से ज्ञात हो सका वह इस प्रकार है कि प्राचीनकाल में बाँसीखेड़ा के पास एक प्राचीन ग्राम लोहर्रा के भयानक जंगल में स्थित गिरी, कन्दराओं में एक दानव रहता था जिसके आतंक के कारण संयासी एवं आमजन ग्रामवासी थर-थर कांपते थे। वहीं लोहर्रा ग्राम से कुछ दूरी पर वर्तमान मन्दिर से 3 किमी दूर एक गुफा में जहाँ बाबा केदारगिरि, माँ भगवती की उपासना तप किया करते थे। दानव के आतंक से मुक्ति दिलवाने के लिए बाबा केदारगिरि ने स्वयं हिंगलाज पर्वत पर जाकर घोर तपस्या की और मां कैलादेवी को प्रसन्न किया और वरदान मांगा कि वह दानव का नरसंहार करे। कुछ समय पश्चात ने उस दानव का मां कैला ने एक कन्या के रूप में कालीसिन्ध नदी के तट पर वध कर दिया। वर्तमान समय में इस स्थान को दानवदह (दानादह) के नाम से जाना जाता है जहां एक बडे पाषाण पर आज भी दानव के पैरों के चिन्ह तथा माताजी के चिन्ह एक शिला पर बने हुए हैं। दानव के वध के पश्चात बाबा केदारगिरी ने कैलादेवी प्रतिमा की स्थापना 1114 ई. में की थी। कैला ग्राम के समीप घोर बियावान जंगल के त्रिकूट नामक पर्वत पर राज राजेश्वरी कैलादेवी का दिव्य मन्दिर है। इस विशाल बियावान जंगल को कैलादेवी अभयारण्य कहा जाता है। यह उत्तर भारत के सिद्ध शक्तिपीठों में से एक है। मन्दिर के नीचे धनुषाकार में एक नदी बहती है जिसे कालीसिल (शिला) नदी कहा जाता है। लगभग सन् 1700 ई. में पुनः निर्मित कैला देवी माँ का यह सिद्ध शक्तिपीठ करौली राज्य जनपद में होने के कारण ही इन्हें करौली वाली माता भी कहा जाने लगा।

बोहरा भगत की किवदन्ती के अनुसार वह अपनी बकरियाँ को उस दुर्गम पहाड़ियों पर चराता था, प्रतिदिन उसकी बकरियां एक विशेष स्थान पर अपना दूध सृवित करती थी। उसने भक्ति भाव से इस स्थल की खुदाई की तो मां केला देवी की प्रतिमा निकली। भगत ने भक्तिपूर्वक पूजन कर ज्योति जगाई धीरे-धीरे प्रतिमा की ख्याति पूरे क्षेत्र में फैल गई। निकटस्थ आमपीतुपुरा ग्राम के मीणा परिवार ने अपनी भक्ति से देवी को प्रसन्न किया। तभी से उसी परिवार के बंशज देवी का भाव प्रकट करके गोठिया कहलाते हैं। अधिकांश लोगों में चर्चा रहती है की माँ कैला देवी की मूर्ति का मुख एक ओर टेढ़ा क्यों है। इस बारे में भी कई किवदन्तियाँ हैं। इनमें कौनसी बात सही है, यह बताना मुश्किल है। कुछ विद्वान लोगों का विचार है कि मां चामुण्डाजी तमोगुणी है और वह मांस मदिरा आदि का भक्षण करती है और माँ कैलादेवी सात्विकी, सतोगुणी है और वे इन चीजों का सेवन नहीं करतीं इसलिए मातेश्वरी केला ने अपना मुख चामुण्डा देवी की ओर से घुमा लिया है ।

एक किवदन्ती के अनुसार आगरे के रहने वाले गोली भगतजी भी कैलादेवी का अनन्य भक्त था जो पुराने जमाने में बैलगाड़ियों के रसाले के साथ देवी भक्तों को लेकर प्रति वर्ष कैलादेवी मंदिर आता था। गोली भक्त को किसी कारणवश मन्दिर में दर्शन नहीं करने दिये, इससे माँ कुपित हो गई और इसी से उनका मुख एक ओर टेढ़ा हो गया। जबकि कुछ लोगों का कहना है कि माताजी का एक भक्त जाते समय माँ से कह गया था कि माँ मैं जल्दी ही लौट कर आऊँगा लेकिन वह फिर नहीं आ सका। अतः माँ का भक्त जिस दिशा में गया था, उसी ओर देखकर उस भक्त की प्रतीक्षा कर रही है।

माँ श्रीकैलादेवी का यह मन्दिर अब जिस भूमि पर बना हुआ है, वह भूमि कभी चम्बल नदी के पार कोटा राज्य में खींची राजा श्री खींची मुकुन्ददास के अधिकार में थी। इन्होंने श्रीकैलादेवी मन्दिर से लगभग 10 किमी. दूर दक्षिण में बसे बाँसीखेरा गाँव में स्थापना बीजक सम्वत 1207 में मां चामुण्डा की मूर्ति स्थापित कर उसकी आराधना की थी। बाँसीखेरा ग्राम खण्डर रूप में परिवर्तित होने के कारण चामुण्डा मैया की यही मूर्ति बाद में सेवा-पूजा के अभाव के कारण करौली के महाराज श्री गोपालसिंह के द्वारा 1708 ई. में यहाँ प्रतिष्ठित हुई । 1787 में मन्दिर का निर्माण कार्य पूरा हुआ बाद में अन्य परवर्ती करौली यदुवंशी शासकों द्वारा समय समय पर मंदिर का व्यापक विकास होता चला आ रहा है। राजा जयसिंहपाल, राजा अर्जुनपाल, राजा भंवरपाल, राजा कृष्ण चंद्रपाल, युवराज विवासतपाल ने मंदिर में अनेक विकास कार्य मंदिर ट्रस्ट के माध्यम से करवाए । प्रतिवर्ष यहाँ अमावस्या से लेकर नवमी तक हजारों दर्शनार्थी पहुँचते हैं। किन्तु चैत्र माह की नवरात्रें के दिनों में तो अपार जन-समूह एकत्र होता है। लाखों जात देने वाले परिवार यहाँ पहुँचकर माता के दर्शन-पूजा करते हैं। अपनी माता की पहली जात देने की लिए श्रद्धालुजन विवाह पश्चात नवविवाहित जोड़े को लेकर माता के दर्शन-पूजा करते हैं और संतान प्राप्ति का सुख पाकर एवं अपनी मन्नत पूरी करने के पश्चात भी आते है । यहाँ नवरात्रों के समय विशालतम लक्खी मेला का आयोजन होता है जिसे कुम्भ के बाद उत्तर भारत का दूसरा धार्मिक मेला माना जाता है। प्रतिदिन रोजाना लाखों की संख्या में दूरदराज के पदयात्री ध्वज लेकर आते हैं। मेले के दौरान महिला यात्री सुहाग के प्रतीक के रूप में हरे रंग की चुड़ियां एवं सिन्दूर की खरीदारी करती हैं।

कविता

सरोज दहिया

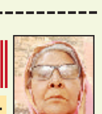

किसनै भारत देस बिगाड़्या

साड्ढा भारत देस कदीमी, बीज बिघन के बोये;
फिल्मां सेत्ती फैसन फैलया, सत करम मिलैं ना टोह्ये ।

झूठी साच्ची घड़ै कहाणी, लोगां नै भरमावैं,
मूरख छोड्डैं काम, अकलबंद नाम्मा खूब कमावैं;
भांड-भडेले-सांगी सारे, एक्टर ईब कहवावैं,
पहल्यां करैं कमाई, फेर संसद म्हैं कुर्सी पावैं ;

नंगड़ जादू सीख गये , सारे नर-नारी मोह्ये,
साड्ढा भारत देस कदीमी, बीज बिघन के बोये ।

फिल्मां की थी कसर किते, बा इस डिजिटल नै हर ली,
चैनल खूब खखाटे ठाहैं, सरम समूची मर ली ;
झूठी कहाणी तैर रही सैं, साची बरगी लाग्गै,
बुद्धि ऊपर पड़दे पड़गे, लोग रात नै जाग्गै ;

धरम-करम ना रहे बखत पै, हांडैं खोये खोये,
साड्ढा भारत देस कदीमी, बीज बिघन के बोये ।

ग्यान रह्या ना आश्रमां का, काम वरण तै न्यारे;
बाह्मण पनही बेच रहे सैं, छतरी बणे बिचारे;
जमींदार नै धरती बेची, होगे वारे-न्यारे,
मीहने आळी तनख़ा भा गी, ओट रहे दुत्कारे ;

'दहिया' नै तै गाम-काम म्हैं, जिंदगी के सुख टोह्ये,
साड्ढा भारत देस कदीमी, बीज बिघन के बोये ।

haribhoomisahitya@gmail.com पर आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

समाज निर्माण में फिल्मों का अहम योगदान : अशोक वर्मा

कलाकार

ओ.पी. पाल

हरियाणवी सिनेमा के दौर को जीवंत करने के लिए फिल्म और लोक कला से जुड़े कलाकारों ने अपनी संस्कृति एवं परंपराओं को जीवंत करने के लिए बॉलीवुड तक का सफर तय किया है। ऐसे कलाकारों में पिछले लंबे समय से हरियाणवीं फिल्म उद्योग से जुड़े अभिनेता अशोक वर्मा भी शुमार है, जिन्होंने समाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों पर फिल्मों, वेब सरीज और सीरियलों में अपनी अभिनय की कला के साथ फिल्म निर्माता के रूप में भी लोकप्रियता हासिल की है। हिंदी, पंजाबी और हरियाणवी सिनेमा में लेखन और अभिनय के साथ हास्य कलाकार के रुप में उन्होंने हिरयाणवी संस्कृति और सामाजिक सरोकार से जुड़ मुद्दों को सर्वपरि रखते हुए युवा पीढ़ी को भी सकारात्मक संदेश देने का प्रयास किया है। फिल्म निर्माता और अभिनेता अशोक वर्मा ने हरिभूमि संवाददाता से हुई बातचीत में कई ऐसे अनछुए पहलुओं को उजागर किया है, जिसमें फिल्मों की पटकथा का सकारात्मक दृष्टिकोण समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभा सकता है।

हरियाणवी फिल्म निर्माता और अभिनेता अशोक वर्मा का जन्म 6 सितंबर 1982 को जींद जिले के गांव रामकली में धर्मवीर वर्मा और ओमपति देवी के घर में हुआ। उनके पिता जींद के सफीदों में हरियाणा स्वास्थ्य विभाग में फोरमैन के पद पर तैनात रहे, जहां वह बचपन से ही परिवार के साथ रहते हैं। घर परिवार में भले ही कोई सांस्कृतिक या कला का माहौल नहीं था, लेकिन अशोक वर्मा को बचपन से ही सांस्कृतिक गतिविधियों में रुचि थी। स्कूल के दौरान वह बाल सभाओं में होने वाले वाले कार्यक्रमों में हिस्सेदारी करते थे। बकौल अशोक वर्मा, साल 2001 में वह जब लैब तकनीशियन की परीक्षा देने चंडीगढ़ गए, तो पता चला कि पंजाबी हास्य कलाकार जसपाल भट्टी भी यहीं रहते हैं और उन्होंने उनसे मुलाकात करके अपनी कला को साझा किया। उन्होंने अपने साथ काम करने का मौका दिया और यहीं से उनका पंजाबी सीरियल प्रोफेसर मनी प्लांट से कला के क्षेत्र में करियर शुरू हुआ। अशोक वर्मा ने बचपन में फिल्मों में काम करने का जो सपना संजोया था उसी लक्ष्य के साथ वह 2005 में मुंबई पहुंच गये, जहां उन्होंने अपने एक दोस्त एवं टीवी सीरियल डायरेक्टर अभिषेक भोला के कहने पर हिंदी बॉलीवुड फिल्म 'गोल्डन बॉयज' के लिए ऑडिशन दिया, जिसके लिए उन्हें डॉक्टर के किरदार के रूप में असरानी और मुकेश तिवारी जैसे कलाकारों के साथ काम करने का मौका मिला। इसी दौरान उन्होंने स्टार प्लस टीवी धारावाहिक में बॉलीवुड अभिनेता के साथ भी अभिनय करने के अलावा हिंदी सीरियल लापतागंज में काम किया, लेकिन कुछ परिवारिक समस्याओं के कारण उन्हें वापस हरियाणा आना पड़ा। उन्होंने हरियाणवी वेब सीरीज़ भूतां का बटेऊ, फिल्मी थाना, दो जुगाड़ी, पहलवान बहु, फंडू सरपंच, फंडू का स्कूल, टाइम पास, धर्मे का कुनबा आदि कई अन्य फिल्मों में हास्य कला का प्रदर्शन किया। तब से वह लगातार हरियाणवी फिल्म उद्योग में काम कर रहे हैं।

ऐसे मिली अभिनय को मंजिल

अभिनेता अशोक वर्मा ने पिछले दो दशक से ज्यादा समय में हरियाणवी, पंजाबी और हिंदी सिनेमा में काम करते हुए फिल्म निर्माता और फिल्म पटकथा लेखक के रूप में भी लोकप्रियता हासिल की है। अब तक 15 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय करने के साथ उन्होंने करीब 20 वेब सीरीज में भी प्रमुख अभिनेता का किरदार निभाया। उनके द्वारा निर्मित हिट फिल्मों में पुनर्जन्म, रमेश रोशनी की लव स्टोरी, वीर किसान, स्वर्ग वर्सेस नरक, भाईचारा आदि में अपने अभिनय की कला को दिखाया है। लोकप्रिय फिल्म निर्माता एवं अभिनेता की आने वाली फिल्मों में मासूम शर्मा, यशपाल शर्मा व सपना चौधरी के साथ फिल्म 'लाइसेंस' मुकेश दहिया के साथ फिल्म 'हलालपुर' के अलावा प्रीत पराई, कमीनो के सुपर स्टार, धीमा जहर, हैलो पुलिस, गडरिया, हॉरर, अनामिका होंगी। वहीं सुमन सेन और अनामिका बावा के साथ फिल्म 'एक रहस्य' और फिल्म 'रोहतक कब्ज़ा' हैं, जिसमें उन्होंने आशुमन प्रोडक्शन के तहत निर्माता की भूमिका भी निभाई है। इसके अलावा अशोक वर्मा ने अमित सैनी रोहतकिया, मासूम शर्मा, एमडी, केडी, देव कुमार देवा, सुरेंदर रोमियो, मनीष मस्त, जीतू जी, विक्की काजला अन्नू कादयान, वीर साहू, सपना चौधरी आदि हरियाणवी टॉप सिंगरों के साथ भी करीब 400 हरियाणवी गानो में बतौर मॉडल व अभिनेता काम किया है। वहीं सरकार, राजनीतिक और विभिन्न कंपनियों के विज्ञापन फिल्मों में भी एक्टिंग की है।

पुरस्कार व सम्मान

हरियाणवी फिल्म निर्माता एवं अभिनेता अशोक वर्मा की फिल्म 'धीमा जहर' को हाल ही में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने रोहतक के एमडीयू में आयोजित हरियाणा फिल्म महोत्सव में बेस्ट एडिटर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। साल 2022 में ग्लोबल आईकोनिक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है।

खबर संक्षेप

ग्रामीणों ने कानून मंत्री मेघवाल से की मुलाकात

महेंद्रगढ़। पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा ने शनिवार को केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल से उनके दिल्ली आवास पर मुलाकात की। पूर्व शिक्षा मंत्री प्रोफेसर रामबिलास शर्मा के साथ उनके विधानसभा क्षेत्र के गांव खुडाना बास की पंचायत एवं लोगों भी मौजूद रहे। शर्मा के साथ गए प्रतिनिधिमंडल ने गांव खुडाना बास के राजस्व रिकॉर्ड से संबंधित समस्या, एवं ग्रामीणों की अन्य समस्या केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल के सामने रखी, जिस पर केंद्रीय मंत्री ने आश्वस्त किया कि वे कानून के तहत जो भी संभव हो सकेगा, आपकी हर समस्या का हर हालत में समाधान किया जाएगा। इस मौके पर सूबेदार गुलाब साहब, सतबीर, ब्लॉक समिति के पूर्व सदस्य से दिनेश तंवर, मंजीत सिंह, नरेश ठेकेदार चितलांग सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

चाय पीने के बहाने लगा दिया 15 हजार का चूना

नारनौल। साइबर फ्रॉड के मामले आए दिन उजागर हो रहे हैं। सेल टैक्स ऑफिस में नौकरी करने वाले एक कर्मचारी के भाई को साइबर ठगों ने साथ चाय पीने एवं परिचित बनकर 15 हजार रुपये का चूना लगा दिया। पीड़ति देशराज वासी गांव जौनायजा खुर्द तहसील नीमराना जिला कोटपूतली-बहरोड राजस्थान के रहने वाले ने बताया कि वह सेल टैक्स ऑफिस में नौकरी करता है। गत 24 मार्च को उसके भाई राजबीर के मोबाइल फोन पर एक कॉल आई, जिसमें उसने कहा कि वह शर्मा जी बोल रहे हैं और शाम को हम दोनों ने साथ चाय पी थी तथा अब वह हॉस्पिटल में है। उसे 25 हजार रुपये की जरूरत है तथा फोन पे कर देना। उन्होंने बताया कि उसका भाई फोन पे नहीं चलाता है तथा उसके पास भाई का फोन आया और बोला कि इन नंबरों पर 25 हजार रुपये फोन पे कर देना।

शहर के मुख्य बाजार की सड़क होने के कारण बढ़ी ग्राहकों व व्यापारियों की परेशानी

दो बार निर्माण होने के बाद ढाई साल में दम तोड़ गई सिनेमा रोड की सड़क

करीब ढाई वर्ष पूर्व नगर पालिका की ओर से बनाई गई थी शहर के सिनेमा रोड की सड़क

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

शहर के सिनेमा रोड पर नगर पालिका की ओर से बनाई गई सड़क महज ढाई साल में दम तोड़ गई है। सड़क में बने गहरे गड्ढों के कारण वाहन चालकों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं व्यापारियों का व्यापार भी प्रभावित रहा है, लेकिन नगर पालिका के अधिकारियों पर जूं तक नहीं रेंग रहीं। बता दें नगर पालिका के नई कार्यकारिणी गठन होने के कुछ पश्चाता शहर के सिनेमा रोड की सड़क का निर्माण किया गया था। सिनेमा रोड के व्यापारियों ने ठेकेदार पर घटिया सामग्री का प्रयोग करने का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन भी किया था। इसके बाद व्यापारियों ने नगर पालिका के सचिव से भी मुलाकात थी। नगर पालिका के सचिव का कहना था कि मामला उनके संज्ञान नहीं है। इस मार्ग की सड़क का दोबारा से निर्माण कराया जाएगा। ठेकेदार के दोबारा से महज खानापूर्ति करते हुए दोबारा से सड़क का निर्माण भी कर दिया गया। स्थानीय व्यापारी लगातार ठेकेदार के कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते रहे, लेकिन नगर पालिका के अधिकारियों एकबार मौके पर पहुंच का सड़क के निर्माण कार्य की जांच नही की। अब अधिकारियों की लापरवाही का खामियाजा शहर की जनता को उठाना पड़ रहा है। इसके अलावा सिनेमा रोड जिले के कई गांवों को शहर से जोड़ता है। करीब दो दर्जन गांवों के लोग शहर आने के लिए इस मार्ग का प्रयोग करते है। सड़क की दयनीय स्थिति होने के कारण ग्रामीणों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है। इस मार्ग से कई शिक्षण संस्थानों की बसे होकर गुजरती है। सड़क की दयनीय स्थिति होने के कारण स्कूलों और कॉलेज के विद्यार्थियों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

महेंद्रगढ़। जर्जर अवस्था सिनेमा रोड की सड़क। फोटो : हरिभूमि

इन सड़कों की हालात हो चुकी है खराब

एसडीएम कार्यकाल के दौरान शहर में जिन सड़कों को निर्माण हुआ था। वो सड़के टूटनी शुरू हो गई हैं। इसके अलावा अन्य सड़कों की हालात ओर भी बेकार हो चुकी हैं। शहर की 11 हट्टा बाजार, सराफा बाजार, परशुराम चौक से मसानी तक, फूलचंद हनुमान मंदिर से मस्जिद तक, ब्रहमचारी रोड से राव बहादुर सिंह की कोठी तक, पूर्व जिला प्रमुख रामसिंह की कोठी से मोहल्ला खटीकान तक, बालाजी चौक से रेलवे स्टेशन तक, रेलवे स्टेशन से लेकर माजरा फाटक तक, बालाजी चौक से सब्जी मंडी, नेमी मिष्ठान भंडार से विधायक राव दानसिंह के मकान तक, मोहल्ला कुम्हारान, मॉडल संस्कृति स्कूल से कॉलेज तक सड़क हालात बिल्कुल खस्ता हो चुकी हैं। इसके अलावा पिछले दिनों बनाई सड़क से भी रोड़िया निकलनी शुरू हो गई है।

सड़क से रोडियां निकलनी हुई शुरू

नगर पालिका द्वारा ढाई साल पहले आईटीआई सड़क को मॉडल सड़क का दर्जा दिया गया था। इस सड़क को करोड़ों रुपये की लागत से निर्माण करवाया गया था। मॉडल सड़क से ढाई साल में ही रोड़िया निकलनी शुरू हो गई है। वहीं कई जगह गहरे गड्ढे होने लगे है। टूटी सड़क के कारण वाहन चालकों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं समीप बस स्टैंड होने के कारण यात्रियों की परेशानी अधिक बढ़ गई है। बस स्टैंड पर आने वाले वाहनों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

कोरियावास पंचायत के प्रस्ताव को स्वीकार करे, अहीरवाल का बढ़ेगा सम्मान

मेडिकल कॉलेज का नामकरण शहीद राव तुलाराम करे सरकार: मंजू चौधरी

सरकार को मुफ्त में जमीन देकर मेडिकल कॉलेज के निर्माण में कोरियावास पंचायत का बड़ा योगदान।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

कोरियावास पंचायत ने सरकार को सैकड़ों एकड़ जमीन दान करके मेडिकल कॉलेज की स्थापना में बड़ी भूमिका निभाई है, लेकिन कॉलेज के नामकरण में सरकार ने जनभावनाओं का सम्मान नहीं किया, साथ ही पंचायत के प्रस्ताव की अनदेखी भी हुई है। महर्षि च्यवन ने ढोसी के पहाड़ पर तपस्या की थी, तो उनके नाम से हार्बल पार्क या अन्य कोई धरोहर का निर्माण संभव है। राव तुलाराम के नाम का विरोध होने से अहीरवाल के समस्त शहीदों का अपमान होगा। उक्त विचार कांग्रेस की विधायक मंजू चौधरी ने एक वार्ता के दौरान व्यक्त किए।

मंजू चौधरी, विधायक

उन्होंने कहा कि सरकारी संस्थाओं का नामकरण शहीद, राजनेता, संतों की पहचान से करने की परंपरा रही है। जिसके अनुसार पंडित बीडी शर्मा पीजीआई रोहतक, महाराजा अग्रसेन यूनिवर्सिटी, गुरु जंबेश्वर यूनिवर्सिटी, ताऊ देवीलाल यूनिवर्सिटी, चौधरी बंशीलाल यूनिवर्सिटी का नामकरण हुआ था, लेकिन राव तुलाराम के नाम से एक भी विभागीय संस्था का नामकरण नहीं हुआ।

जबकि उन्होंने आजादी के संघर्ष की नींव रखी थी। नारनौल के पास नसीबपुर के मैदान में अंग्रेजों से लौहा लेते हुए उन्होंने कई अंग्रेजी अफसरों का मारा था। पांच हजार से अधिक योद्धाओं ने वतन की आजादी के लिए शहादत दी थी। पिछले कार्यकाल में सरकार ने प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना तैयार की थी, जिसके लिए कोरियावास पंचायत ने सरकार को सैकड़ों एकड़ जमीन मुफ्त में उपलब्ध कराई थी। इसलिए सरकार का नैतिक दायित्व बनता है कि कॉलेज के नामकरण में पंचायत की सहमति ले, लेकिन राजनीतिक साजिश के तहत अहीरवाल व शहीदों को नीचा दिखाने के लिए कॉलेज का नाम थोप दिया। उन्होंने सरकार ने मेडिकल कॉलेज के प्रांगण में राव तुलाराम की प्रतिमा स्थापित करने का सुझाव दिया है। तर्क दिया कि शहीदों के सम्मान से युवाओं में राष्ट्रसेवा का जुनून बढ़ेगा। विधायक ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने हमेंशा शहीदों को सम्मान दिया है और मेडिकल कॉलेज का नामकरण राव तुलाराम के नाम से कराने के लिए सीएम को पत्र भी लिखा जाएगा।

मेडिकल कॉलेज का नामकरण राव तुलाराम के नाम पर ही हो: रमेश पायलट

हरियाणा यादव महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष व सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता रमेश राव पायलट ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सरकार से मांग की है कि नारनौल क्षेत्र के कोरियावास गांव में बन रहे मेडिकल कॉलेज का नाम 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महायोद्धा अमर शहीद राजा राव तुलाराम के नाम पर ही होना चाहिए। नारनौल के समीप नसीबपुर के मैदान में आजादी की पहली जंग में राजा राव तुलाराम के नेतृत्व में इस इलाके के सर्व समाज के पांच हजार क्रांतिकारी योद्धाओं ने अपना बलिदान देकर आजादी की जंग की मशाल जलाई थी। मेडिकल कॉलेज का नाम अमर शहीद राजा राव तुलाराम के नाम पर रखने पर यह आजादी के उन महान वीर बलिदानियों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अन्य किसी महापुरुष एवं संत के नाम पर कोई अन्य संस्थाएं भी खोली जा सकती है। राव पायलट ने कहा कि देश के शहीद किसी जाति या धर्म के नहीं होते, इस देश की धरोहर होते हैं और उनके मान सम्मान से बढ़कर कुछ भी नहीं होता। कोरियावास मेडिकल कॉलेज का नाम अगर राव तुलाराम के नाम पर ना रखा गया तो पूरे अहीरवाल में भारी रोष फैलेगा और हरियाणा यादव महासभा इस तरह के किसी भी फैसले का भारी विरोध करेगी।

सभी सहमति बनाएं

विधायक मंजू चौधरी ने कहा कि महर्षि च्यवन सिद्ध तपस्वी रहे हैं। उन्होंने आयुर्वेद को एक नई पहचान दी थी। उनके नामकरण के लिए ढोसी पर्वत पर ही हार्बल पार्क या अन्य कोई दूसरी धरोहर का निर्माण करना चाहिए। राव तुलाराम अहीरवाल समेत समस्त दक्षिण हरियाणा की सोच और धरोहर है। कोरियावास पंचायत ने शहीद राव तुलाराम के नाम प्रस्ताव पारित करके सहरानीय प्रयास किया है।

मेडिकल कॉलेज का नाम शहीद राव तुलाराम हो

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

■ युवा इंकलाब संगठन ने सीएम को पत्र भेजा

कोरियावास मेडिकल कॉलेज का नाम महर्षि च्यवन की बजाय स्वतंत्रता सेनानी वीर शिरोमणि शहीद राव तुलाराम के नाम पर करने को लेकर युवा इंकलाब संगठन ने सीएम को पत्र को भेजा है। युवा इंकलाब संगठन अध्यक्ष कुलदीप सुरजनवास ने बताया कि महर्षि च्यवन एक महान ऋषि थे और सदियों से पूरे हिंदू समाज के श्रद्धेय व पूजनीय हैं। भाजपा सरकार ने उनमें आस्था प्रकट करते हुए उनकी तपोस्थली-ढोसी को पर्यटन स्थल में बदलने का निर्णय लिया है और एक अच्छे-खासे बजट का भी निर्धारण किया है। यह पवित्र स्थान जल्द ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करेगा। यह क्षेत्र जहां महान ऋषियों की तपोस्थली रहा हैं। वहीं निडर योद्धाओं व बलिदानियों की जन्मस्थली भी रहा है। प्राचीन भारत के सम्राटों की सेना से लेकर 1857 क्रांति हो या आजाद हिंद फौज या आधुनिक भारत की तीनों सेनाओं में यहां के जवानों ने अपने साहस, शौर्य व शहादत के बल पर विशेष मुकाम (सम्मान) हासिल किया है। यहां का युवा देश के लिए शहीद होना गर्व व गौरव का विषय मानता है। इनके प्रेरणाश्रोत हैं, 1857 की क्रांति के महानायक वीर शहीद शिरोमणी राव तुलाराम। एक ऐसा योद्धा जो छोटी सी रियासत का जागीरदार होते हुए भारत माता की आजादी के लिए विश्वशक्ति से टकरा गए। अपने क्षेत्र के 5000 युवाओं की सेना बनाकर, हथियारों के अभाव में कृषि औजारों के साथ दुश्मन की तोपों से भीड़ गए अड़ गए। बंदूक, तोपों से लैस सैंकड़ों अंग्रेजी सैनिकों और शीर्ष अफसरों को मौत के घाट उतार दिया। शहीद राव तुलाराम संपूर्ण 1857 की क्रांति के अद्वितीय योद्धा हैं, लेकिन लगभग आठ साल पहले पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल के द्वारा घोषणा के बावजूद शहीद स्मारक का निर्माण शुरू नहीं हुआ है और पीछे विधानसभा में भाजपा के एक मंत्री द्वारा दिए गए जवाब से तो साफ पता चलता है कि शहीद स्मारक नसीबपुर को लेकर सरकार की मंशा साफ नहीं है। युवाओं और सैनिकों की भावनाओं को ध्यान में रखे।

यदुवंशी के विद्यार्थी आईआईटी-जेईई मेन्स में छाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

यदुवंशी शिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों ने आईआईटी-जेईई मेन्स परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त की है। संस्था के कई छात्रों ने उच्च रैंक व स्कोर प्राप्त कर न केवल अपने माता-पिता, शिक्षकों का नाम रोशन किया, बल्कि संस्था के साथ-साथ पूरे क्षेत्र को गौरवान्वित किया। विद्यार्थी निशांत 99.96, मनीष यादव 99.88, दिव्य यादव 99.87, दिपांशु 99.73, अमन 99.71, अरूण 99.68, जतिन 99.60, केशव 99.54, अनुज 99.37, दिया 99.1, विनीत 99.03 ने सफलता हासिल की। वहीं 95 परसेंटाइल से अधिक संध्या 98.92, दिव्या 98.87, विशांत 98.82, अनुज 98.81, मुस्कान गर्ग 98.73, दिव्यांशु 98.62, श्वेत 98.48, मिलन 98.46, कपिल 98.40, रितिका 98.38, साहिल सोनी 98.28, सिद्वार्थ 98.20, मोहित कुमार 97.97, प्रियांशी 97.69, ऐंजल 97.54, भावेश कुमार 97.48, मिलन गोयल 97.08, दीक्षा यादव 97.00, प्रिंस 96.92, ओजस्वनी 96.82, साहिल कुमार 96.69, अंकित दहिया 96.69, गाव्यांशी यादव 96.64, तृप्ति 95.99, रानी शर्मा 95.9, राहुल कुमार 95.76, अनुज 95.64, सचिन शेहरावत 95.51, शुभम 95.34, गीतिका यादव 95.15, मोहित कुमार 95.15, नेहा 95 आदि विद्यार्थी रहे। प्राचार्य पवन कुमार ने बताया कि इस सफलता के पीछे छात्रों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों का कुशल मार्गदर्शन और अभिभावकों का सहयोग है। उन्होंने कहा कि यह सफलता केवल एक परीक्षा पास करने की नहीं, बल्कि आपके जीवन में एक नए अध्याय की शुरूआत है। ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि आज आपने जो उपलब्धि हासिल की है, वह आपके सपनों की ओर एक मजबूत कदम है। आगे और भी कठिन चुनौतियां आएंगी, और हमें उन्हीं मूल्यों, मेहनत, सच्चाई और समर्पण के साथ उनका सामना करना होगा। वाइस चेयरमैन एडवोकेट कर्ण सिंह यादव, वाइस चेयरपर्सन संगीता यादव, ग्रुप निदेशक विजय सिंह यादव, फाउंडर डायरेक्टर डॉ. राजेंद्र सिंह यादव उपस्थित रहे।

जन संवाद को लेकर एडीसी ने ली बैठक

नारनौल। अधिकारियों की बैठक लेते एडीसी डा. आनंद कुमार शर्मा।

नारनौल। अतिरिक्त उपायुक्त डा. आनंद कुमार शर्मा ने लघु सचिवालय में सीएम विंडो व जन संवाद पर आने वाली शिकायतों की समीक्षा के लिए अधिकारियों की बैठक बुलाई। उन्होंने इस प्लेटफार्म पर आने वाली हर शिकायत को जल्द से जल्द निपटने के निर्देश दिए। एडीसी ने कहा कि सीएम विंडो पर आने वाली शिकायतों का समाधान करने के बाद एक्शन टेकन रिपोर्ट भरते समय पूरी सावधानी बरती जाए। उन्होंने कहा कि एटीआर दाखिल करते समय अगर कोई डिमांड और पॉलिसी मैटर का मामला है, तो एटीआर में स्पष्ट लिखा जाए। उन्होंने कहा कि कुछ मामले ऐसे होते हैं, जो मुख्यालय से संबंधित होते हैं। ऐसे मामलों में अधिकारी लगातार पत्राचार करें तथा उन समस्याओं का निदान करने के लिए लगातार प्रयास करें।

सिंघानिया विश्वविद्यालय में पूर्व छात्रों का मिलन समारोह आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। कार्यक्रम में उपस्थित विवि स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

सिंघानिया विश्वविद्यालय पचेरी में भूतपूर्व छात्रों के सम्मान में एक भव्य एलुमिनी मीट का आयोजन किया गया। इस दौरान विश्वविद्यालय के कई अतिथियों और पूर्व छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम की मुख्यातिथि माउंट एवरेस्ट पर्वतारोही और सिंघानिया विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा डॉ. आशा झांझडिया और विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी सिंहराज सिंह सिंगल रहे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रेसीडेंट डॉ. मनोज कुमार ने की। कैम्पस डायरेक्टर एवं उपाध्यक्ष डॉ. पीएस जस्सल ने कहा कि एलुममिनी मीट न केवल पुरानी यादों को ताजा करने का मौका है, बल्कि यह हमारे साझा भविष्य की नींव भी है। डॉ. आशा ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में छात्रों को मेहनत, समर्पण और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने अपनी एवरेस्ट यात्रा के अनुभव भी साझा किए। सिंहराज सिंघल ने बताया कि यह शेखावाटी क्षेत्र का पहला विश्वविद्यालय था, जिसने प्रतिभाओं को आगे लाने में हर महत्वपूर्ण कदम उठाया। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए विश्वविद्यालय के प्रति अपने गहरे जुड़ाव को स्मरण किया। यूनिवर्सिटी के प्रेसीडेंट डॉ. मनोज कुमार ने कहा कि पूर्व छात्र किसी भी विश्वविद्यालय की असली पहचान होते हैं। आज का यह मिलन हमें न सिर्फ गर्व से भर देता है, बल्कि भविष्य के लिए नई प्रेरणा भी देता है। उन्होंने यह भी घोषणा की है कि भविष्य में ऐसे एलुमनाई मीट का आयोजन लगातार किया जाएगा, जिससे विश्वविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों को मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलती रहे। मुख्य वित्त अधिकारी एवं उपाध्यक्ष सुनील कुमार सोबती ने सभी से आह्वान किया कि वे अपने ज्ञान, समय, संसाधन अथवा सुझाव के माध्यम से इस संस्थान की विकास यात्रा में सहभागी बनें, ताकि यह संस्थान एक आदर्श और प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित हो

नशे के खिलाफ पहलवान की बग्गी यात्रा, रोहतक में होगा समापन

19 जिलों को किया कवर, 30 तक सभी 22 जिलों में जाएगी

नशे से शरीर का नाश होता हैं, वहीं परिवार व सामाजिक दृष्टि से छिन्न भिन्न होकर आर्थिक तंगी का शिकार हो जाते हैं।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

कनीना। नशे के खिलाफ यात्रा निकालते पहलवान रविंद्र तोमर। फोटो : हरिभूमि

देश के नागरिकों को नशे से दूर रहकर अपनी ऊर्जा सकारात्मक कार्यों में लगानी चाहिए। नशे से शरीर का नाश होता हैं, वहीं परिवार व सामाजिक दृष्टि से छिन्न भिन्न होकर आर्थिक तंगी का शिकार होकर तबाह हो जाता है। ये विचार हरियाणा के जींद जिले के एंचरा कलां गांव निवासी रविंद्र तोमर ने व्यक्त किए। जिन्होंने प्रदेश में गाड़ी बग्गी यात्रा निकालकर नशे के खिलाफ संदेश दिया है। उनका मानना है कि उनके दादा व पिता पहलवान रहे हैं, जो सामाजिक बुराइयों व नशे के प्रति आमजन को जागरूक करते रहे हैं। उनकी प्रेरणा से ही उन्हें नशे के खिलाफ यात्रा निकालने का फैसला किया।

यात्रा के दौरान वे युवाओं को नशें की लत से दूर रहने के लिए जागरूक कर रहे है। रविंद्र तोमर ने बताया कि उन्होंने यह यात्रा अपने गांव से बीती पांच फरवरी से शुरू की थी, जो प्रदेश के सभी 22 जिलों में जाएगी। अब तक 19 जिलों को कवर कर चुकी है। रविवार को उनकी यात्रा कनीना के रास्ते महेंद्रगढ़ जिले में पहुंची। जहां नागरिकों ने उनका जोरदार स्वागत किया। उन्होंने बताया कि मेवात में यात्रा का विशेष अभिनंदन हुआ। जहां कमांडो हिदायत सिंह ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस यात्रा के माध्यम से वह गांव गांव और शहर शहर युवाओं को नशा न करने की प्रेरणा देते हैं। नशा नहीं करना चाहिए और जीवन में खलों को अपना कर घी व दूध का सेवन करना चाहिए तथा शारीरिक मेहनत करनी चाहिए। जिससे शरीर मजबूत बन रहे। ऐसा करने से बीमारियां नजदीक नहीं आती है।

रोजाना करते 40 से 50 किलोमीटर

उन्होंने बताया कि प्रतिदिन रोजाना 40 से 50 किलोमीटर यात्रा तय होती है। इस दौरान जहां भी युवा मिलते हैं, उनको नशा ने करने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने हरियाणा सरकार व पुलिस विभाग की ओर से नशामुक्ति के लिए निकली जा रही साइक्लोत्थान यात्रा की भी सराहना की। उन्होंने बताया कि उनकी यात्रा अटेली, नारनौल, लोहारू, भिवानी होते हुए रोहतक पहुंचेगी। जहां 30 अप्रैल के बाद मई माह के पहले सप्ताह में उसका समापन होगा। इसके 15 दिन का ब्रेक देने के बाद उड़ता पंजाब में नशा मुक्ति यात्रा निकाली जाएगी।

लेबर कोड के विरोध में ट्रेड यूनियनें 20 मई को करेंगी देशव्यापी हड़ताल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

एआईयूटीयूसी के प्रदेश सचिव कॉमरेड हरिप्रकाश ने बताया कि श्रमिकों-कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए 20 मई को देशव्यापी हड़ताल की जानी है और आम आदमी के हित में इस देशव्यापी हड़ताल को सफल करना वक्त की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भाजपा की केंद्र सरकार देश व दुनिया के सरमायेदारों की लूट को पुख्ता करने के लिए सभी लोकतांत्रिक, वैधानिक मान्यताओं व श्रम अधिकारों को कुचल रही है। मजदूरों के ट्रेड यूनियन अधिकारों को कुचलते हुए विरोध की हर आवाज को दबाने व हड़ताल करने जैसे जनवादी अधिकारों को छीन रही है। पूंजीपतियों, उद्योगपतियों के हित में कठिन व जुझारू संघर्षों से अर्जित श्रम कानूनों को खत्म करके केन्द्र सरकार उनकी जगह चार लेबर कोड लेकर आई है। इन लेबर कोड के लागू होने से जिस उद्योग में 300 से कम मजदूर काम करते हैं, उन उद्योगों में मजदूरों की छंटनी, ले-आफ, तालाबंदी व कारखानाबंदी करने के लिए अब मालिकों को किसी संवैधानिक निकाय की मंजूरी लेना जरूरी नहीं रहा।

इसके अलावा अल्प अवधि रोजगार, रात्रि पाली में महिलाओं से ड्यूटी लेने, ठेका श्रमिक अधिकारों की कटौती व फैक्ट्री की परिभाषा तक बदल दी गई हैं। ये लेबर कोड लागू होने से देश के अधिकांश औद्योगिक श्रमिक श्रम-कानूनों के दायरे से बाहर हो जाएंगे।

खबर संक्षेप

सती माता मंदिर के पास मिले शव की हुई पहचान

नारनौल। पटीकरा में सती माता मंदिर पास मिले नवयुवक के शव की पहचान करीब 27 वर्षीय अंकित कुमार पुत्र राकेश कुमार वासी गांव सेका के रूप में हुई है। सिटी पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई करने उपरांत शव का पोस्टमार्टम करा उसे परिजनों को सौंप दिया। जानकारी के मुताबिक पटीकरा के सती माता मंदिर के समीप शनिवार प्रातः करीब 11 बजे एक नवयुवक के शव को पड़ा देख ग्रामीणों ने पुलिस को सूचित किया। तब मृतक के शरीर से भारी बदबू आ रही थी और पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर सिविल अस्पताल नारनौल की मोर्चरी में रखवा दिया। तब तक उसकी पहचान नहीं हुई थी। रविवार प्रातः पुलिस की तरफ से सेका में मृतक के परिजनों के पास फोन गया, जिस पर वे अस्पताल पहुंचे।

अनाज मंडी नांगल चौधरी से 60 बैग सरसों चोरी

नारनौल। नांगल चौधरी की अनाज मंडी में स्थित दुकान नंबर 17 से 60 बैग सरसों चोरी हो गई। पीड़ित सुनील कुमार वासी नौलायजा ने बताया कि उसने अनाज मंडी नांगल चौधरी में सहीराम अत्तर सिंह के नाम से दुकान नंबर 17 में आढ़त की दुकान की हुई है। गत 17 अप्रैल की रात्रि को उसकी फड़ से 60 बैग सरसों कोई अज्ञात व्यक्ति चोरी कर ले गया। उसने सरसों की तलाश भी की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। पुलिस ने सरसों चोरी होने का मामला दर्ज करते हुए जांच शुरू कर दी है।

पेंशन वित्त विधेयक के विरोध में प्रदर्शन कल

नारनौल। रिटायर्ड कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित अखिल भारतीय राज्य सरकारी पेंशनर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (रजिस्टर्ड नंबरः0196) के राज्य प्रेस सचिव धर्मपाल शर्मा ने बताया कि राज्य प्रधान मास्टर वजीर सिंह, महासचिव रतन जिंदल व समस्त राज्य कार्यकारिणी के निर्णय अनुसार लोकसभा में पेंशन वित्त विधेयक पास करने के विरोध में 22 अप्रैल को उपायुक्त कार्यालय पर धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। केंद्र सरकार द्वारा गत 25 मार्च को लोकसभा में पेंशन वित्त विधेयक पास किया गया है, जिसमें 31 दिसंबर 2025 से पहले सेवानिवृत होने वाले कर्मचारी तथा पुराने पेंशनर्स को आठवीं वेतन आयोग का लाभ नहीं दिया जाएगा और वह न्यायालय में अपील नहीं कर पाएगा, जिससे वरिष्ठ रिटायर्ड कर्मचारियों को पेंशन में भारी नुकसान होगा। जबकि बढ़ती उम्र में ज्यादा आर्थिक लाभ की जरूरत है।

समस्या समाधान के दावे के बावजूद शहर में सीवर हो रहे ओवरफ्लो

जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग अब तक ओवरफ्लो की समस्या से निजात दिलाने में रहा नाकाम

■ नगर परिषद ने पिछले सात-आठ साल में जितनी भी नालियों, नालों एवं सड़कों का निर्माण करवाया, उन नालियों की निकासी सीवर की होदियों में कर दी।

नारनौल। चांदुवाड़ा में ओवरफ्लो सीवर से बहती गंदगी व मिल्क चिलिंग प्लांट के सामने तोड़ी गई सड़क, जिसकी मरम्मत तक नहीं करवाई। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

लंबे समय से शहरवासियों को ओवरफ्लो सीवर की समस्या से निजात नहीं मिल पाई है। यह तब है, जब जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग समस्या की मूल जड़ ढूंढकर उसे हल करने का दावा कर रहा है। पिछले दिनों रेवाड़ी रोड पर बने चिलिंग मिल्क प्लांट के सामने नेशनल हाईवे मार्ग नंबर 11 के एकतरफ के भाग को तोड़ा गया और महीनेभर तक बंद रखकर समस्या हल समाधान करने का प्रयास किया गया। मगर कमाल है कि इसके बावजूद भी शहर में जगह-जगह सीवर ओवरफ्लो हो रहे हैं और आमजन परेशान हैं। बता दें कि ओवरफ्लो सीवर की समस्या नारनौल शहर के लिए नासूर बन चुकी है। यह समस्या कई सालों से है, जो बार-बार उभरकर विभाग के लिए चुनौती बनकर खड़ी हो जाती है। इसी विकराल समस्या को हल करने के लिए विभाग ने करीब एक महीना पहले रेवाड़ी रोड पर जिला पुस्तकालय के सामने डाक्टर आहुजा की तरफ से नेशनल हाईवे मार्ग नंबर 11 को काफी दूरी में तोड़ दिया था। विभाग का मानना था कि वहां पर मिट्टी में गहराई में दबी पाइप लाइन चॉक यानि बंद हो गई है, जिस कारण पीछे के सीवर ओवरफ्लो होते रहते हैं। कमाल की बात है कि जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग ने वहां की लाइन को आहुजा अस्पताल से मोड़ावाला मंदिर गेट तक बदल भी दिया, लेकिन समस्या हल नहीं हुई। अब भी शहर में जगह-जगह सीवर ओवरफ्लो हो रहे हैं तथा लोग इनसे निकलकर गलियों एवं नालियों में बहने वाली गंदगी एवं बदबू से भारी परेशान हैं। यहां गौर करने वाली बात यह भी है कि सड़क के इसी हिस्से को करीब तीन साल पहले भी खुदाई करके नई लाइनें डाली गई थी, तब भी समस्या का समाधान नहीं हो पाया था, जिस कारण अब एक माह पहले वही कार्य दोहराना पड़ा है।

नालियों को जोड़ रखा है सीवर में

शहर में सीवर की समस्या को बढ़ाने के लिए काफी हद तक नगर परिषद भी जिम्मेवार है। नगर परिषद ने पिछले सात-आठ साल में जितनी भी नालियों, नालों एवं सड़कों का निर्माण करवाया, उन नालियों की निकासी सीवर की होदियों में कर दी। जिस कारण घरों के रोजाना के बहने वाले नालियों के पानी के साथ-साथ बरसात का पानी भी इन्हीं सीवर लाइनों से बहने लगा है, जबकि शहर में एक भी सीवर वाटर ट्रीटमेंट प्लांट ऐसा नहीं है, जहां निकासी प्राकृतिक हो यानि अपने आप निकलती हो। इसके लिए एसटीपी को बिजली से चलाना पड़ता है, जबकि बिजली नहीं होने या मोटरें खराब होने की स्थिति में लाइनें भर जाती हैं और बार-बार ओवरफ्लो होती रहती हैं।

यह कहते हैं अधिकारी

जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के जेई आकाश ने बताया कि सीवर समस्या को हल कर दिया गया है। अब कहीं सीवर ओवरफ्लो नहीं होते। यदि कहीं सीवर बह रहे हैं तो इसकी उन्हें जानकारी नहीं है। उन्होंने बताया कि शहर में ओवरफ्लो सीवर की समस्या घरों की नालियों को सीवरों से जोड़ने के कारण है। इनमें घरों के साथ-साथ बरसात का पानी भी भर जाता है। नगर परिषद को नालियों पर पॉलीथीन आदि रोकने के लिए जालियां लगाने के लिए बोला गया है, लेकिन सुधार नहीं हो पाया है। फिर से रिमाइंड करवाएंगे।

नहीं करवाई सड़क की मरम्मत

जनस्वास्थ्य विभाग ने अपनी सीवर लाइनें ठीक करने के लिए बेशक से नेशनल हाइवे की सड़क को तोड़ दिया हो, लेकिन कमाल की बात है कि अपना काम निकालने के बाद विभाग ने सड़क की मरम्मत तक करवाना उचित नहीं समझा है। जिस कारण जिस हिस्से में सड़क तोड़ी, वहां अब भी गड्ढे बने हैं तथा धूल-मिट्टी बनी है और लोग परेशान हैं।

इन स्थानों पर हो रहे सीवर

बेशक से आजकल भीषण गर्मी पड़ने लगी है, लेकिन ओवरफ्लो सीवर सूखने का नाम ही नहीं ले रहे। उनकी गंदगी से मोहल्ला चांदुवाड़ा में डा. नरूला के घर के सामने बहता सीवर जनस्वास्थ्य विभाग को चिड़ा रहा है। इसी प्रकार मोहल्ला नलापुर, मालीटिब्बा, सीआईए रोड, कोलियान, इंदिरा कॉलोनी समेत अनेक जगह ऐसी हैं, जहां ओवरफ्लो सीवर की समस्या बार-बार बनी रहती है। इन दिनों यहां के सीवर ओवरफ्लो हो रहे हैं तथा लोग भाग परेशान हैं, लेकिन विभाग इससे अनभिज्ञता जता रहा है।

यह बोले आमलोग

चांदुवाड़ा में शुक्ला कार्ड के एंपलाई मुकेश यादव, वरिष्ठ नेता सूरज बौहरा, सीआईए रोड के पार्षद देवेंद्र, कोलियान मोहल्ला के भीमसिंह आदि ने बताया कि हमारे यहां सीवर कभी विरले ही सही प्रकार से चलते हैं। अन्यथा यह अक्सर ओवरफ्लो ही होते रहते हैं। इनकी बार-बार शिकायत करके वह थक चुके हैं, लेकिन विभाग के कर्मचारी और अधिकारी ध्यान ही नहीं देते। उन्हें इस समस्या से बार-बार अवगत कराया जाता है, लेकिन समस्या ज्यों की त्यों बनी है।

तारों से निकली चिंगारी से जलकर राख हुई साढ़े पांच एकड़ में खड़ी गेहूं की फसल

किसान के सपने हुए चूर-चूर, सदमे में परिवार

कनीना। पीड़ित किसान को सांत्वना देते गणमान्य लोग। फोटो : हरिभूमि

खुशियां गहन चिंता में बदली

पीड़ित किसान सुमित ने बताया कि परिवार में शादी विवाह एवं सामाजिक कार्यक्रम सहित सभी खुशियां उनकी इस फसल से होने वाली आमदनी पर आधारित थी, लेकिन अब उनकी खुशियां गहन चिंता में बदल गई। किसान ने बताया कि आगजनी की इस घटना के बाद पूरा परिवार सदमे में है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

कनीना में रेवाड़ी रोड पर रविवार दोपहर के समय घटित हुई आगजनी की घटना में साढ़े पांच एकड़ जमीन में खड़ी गेहूं की फसल जलकर राख हो गई। जिससे किसान के सपने चूर-चूर हो गए। बताया जा रहा है कि दोपहर करीब एक बजे ज्यों ही बिजली सप्लाई की गई त्यों ही हवा के झोंके से निकली चिंगारी विकराल रूप धारण करती चली गई। मौके पर मौजूद आसपास के किसानों ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन आग की बढ़ती लपटों के कारण काबू नहीं पाया जा सका। जानकारी के अनुसार साढ़े पांच एकड़ जमीन नगर पालिका के पूर्व प्रधान मास्टर दलीप सिंह की बताई गई है। जिसे गांव के ही किसान सुमित पुत्र भागीरथ निवासी कनीना ने माल बंटाई पर लिया हुआ था। किसान फसल कटाई के लिए कंबाइन मशीन लाने के लिए गया हुआ था, लेकिन पीछे से घटित हुई आगजनी की घटना ने उनके सपनों पर पानी फेर दिया। आगजनी की सूचना डायल 112 फायरब्रिगेड को दी गईद्ध जिन्होंने मौके पर पहुंचकर आगजनी पर काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

कनीना। खेतों में आग लगने से राख हुई गेहूं की फसल। फोटो : हरिभूमि

कनीना। मौके पर पहुंचे राजस्व विभाग के अधिकारी, फायरब्रिगेड कर्मचारी व ग्रामीण।

मुआवजे का दिया आश्वासन

वहीं जानकारी मिलने पर नगर पालिका के पूर्व प्रधान एवं पार्षद राजेंद्र सिंह लोढ़ा, पार्षद दीपक चौधरी सहित सैकड़ों प्रबुद्धजन मौके पर पहुंचे और पीड़ित किसान को ढाढस बंधाया तथा प्रशासनिक अधिकारियों ने मौका देखकर सरकार से उचित मुआवजा दिलवाने की दिशा में प्रयास शुरू किए। मौके पर बिजली निगम के एसडीओ उमेश कुमार वर्मा, भू राजस्व विभाग के पटवारी अनूप सुहाग, सिटी थाना पुलिस पहुंची। जिन्होंने नुकसान का आकलन कर नुकसान की रिपोर्ट शीघ्र ही सरकार तक भिजवाने का आश्वासन दिया।

मिड-डे मील कार्यकर्ता यूनियन आज सौंपेंगी ज्ञापन

मंडी अटेली। मिड-डे मील कार्यकर्ता यूनियन सम्बंधित एआईयूटीयूसी की जिला प्रधान सुनीता, जिला सचिव सन्तोष यादव, श्रमिक संगठन एआईयूटीयूसी के जिला प्रधान मास्टर सुबेसिंह ने शनिवार को एक संयुक्त प्रेस नोट जारी कर बताया कि जिलाभर की मिड-डे मील कार्यकर्ता 21 अप्रैल को दोपहर एक बजे लघु सचिवालय पार्क नारनौल में एकत्रित होकर राज्य महासचिव कुसुम पांचाल के बदले की भावना से की गई बर्खास्तगी के विरोध में प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपेंगी।

मंदिर जा रहे दंपत्ति सड़क हादसे में घायल

नारनौल। सिंघाना रोड पर खालड़ा के हनुमान मंदिर जा रहे स्कूटी सवार एक दंपत्ति को कार ने टक्कर मार दी, जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए तथा उनके मोबाइल फोन भी टूट गए। आसपास के लोगों ने उपचार के लिए उन्हें अस्पताल पहुंचाया। पीड़िता मीना देवी पत्नी सूरत सिंह गांव धौलेड़ा हाल आबाद केशव नगर गली नंबर पांच नारनौल ने बताया कि उसका पति सूरत सिंह फौज से रिटायर होकर हरियाणा पुलिस में एसपीओ लगा हुआ है। वह दोनों गत 16 अप्रैल को सुबह करीब नौ बजे स्कूल से खालड़ा मंदिर जा रहे थे। स्कूटी पति सूरत सिंह चला रहा था तथा वह खुद पीछे बैठी थी।

महेंद्रगढ़। पेड़ पर पड़ा टीनशेड। फोटो : हरिभूमि

तेज अंधड़ में उजड़ा गरीब परिवार का आशियाना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

पश्चिमी विक्षोभ के चलते आए तेज अंधड़ ने महेंद्रगढ़ जिले के गांव बवाना में एक गरीब परिवार का आशियाना उजाड़ दिया। शनिवार शाम अचानक आए तेज तूफान में एक मकान की छत पर लगा टीन शेड उखड़कर हवा में उड़ गया और करीब 100 मीटर दूर जाकर पेड़ों में उलझ गया। गनीमत यह रही कि टीनशेड किसी राहगीर या आमजन के ऊपर नहीं गिरा, वरना बड़ा हादसा हो सकता था।

घर की बुजुर्ग महिला चांदबाई ने बताया कि इस तेज अंधड़ के कारण उनका टीनशेड पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। आर्थिक तंगी से जूझ रहे इस परिवार के लिए यह हादसा किसी बड़े संकट से कम नहीं है। परिवार में कमाने वाला कोई नहीं है और अब उनके पशु भी झुलसाने वाली गर्मी में खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर हैं। तेज अंधड़ में उड़ते हुए टीनशेड के कुछ हिस्से पड़ोसियों की छत पर जा गिरे और वहां लगी सोलर प्लेट और पानी की टंकी को भी नुकसान पहुंचा दिया। सोलर प्लेट और टंकी टूटने से पड़ोसियों को भी भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है। चांदबाई ने बताया कि उन्होंने इस घटना की सूचना गांव के सरपंच और क्षेत्रीय विधायक कंवर सिंह को दी है। विधायक कंवर सिंह ने जल्द से जल्द हर संभव सहायता दिलवाने का आश्वासन दिया है। गांववासियों ने भी प्रशासन से मांग की है कि प्रभावित परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान करने की गुहार लगाई है।

जेईई मेन में आरपीएस के 55 विद्यार्थियों ने 99 परसेंटाईल से अधिक पाया स्कोर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा घोषित जेईई मेन के परीक्षा परिणामों में आरपीएस ग्रुप के 55 विद्यार्थियों ने 99 परसेंटाइल व इससे अधिक अंक प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान रचा। आरपीएस की हर्षि ने 99.985, परसेंटाईल, छवि यादव ने 99.92 परसेंटाईल, सुजल व पियूष व सुजल ने 99.86 परसेंटाइल प्राप्त कर अंकों की सर्वश्रेष्ठता का शिखर छुआ है, वहीं विषयवार परीक्षा परिणाम पर नजर डालें तो आरपीएस की हर्षि, ईशान, लक्षिता व अनुज ने फिजिक्स में 100 पर्सेंटाइल प्राप्त कर पूरे भारत में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन की अमिट छाप छोड़ी।

वहीं मैथ्स में ईशान ने 100 परसेंटाइल, छवि ने 99.99, हर्षि ने 99.98, तनिष्क व कार्तिक ने फिजिक्स में 99.96 पर्सेंटाइल प्राप्त की तो वहीं केमेसट्रि में हर्षि ने 99.98 पर्सेंटाइल प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। आरपीएस ग्रुप सीईओ इंजी मनीष राव ने बताया की हर्षि ने 99.985 परसेंटाइल, छवि यादव ने 99.92, सुजल ने 99.86, पियुष ने 99.86, प्रणव कुमार ने 99.83, हर्षित राय ने 99.80, सिद्धार्थ आर्य ने 99.80, इसान अफरिया ने 99.79, चनदाशू ने 99.44, रितविक ने 99.44, रिदम ने 99.77, दिव्यांशी तेवतीया ने 99.77, गुणादित्य संधू ने 99.77, चितवन ने 99.75, प्रियांशु ने 99.75, कृष ने 99.74, अनुज ने 99.69, याशिका ने 99.60, ललित ने 99.58, सुमित पहल ने 99.55, कार्तिक ने 99.52, कृष ने 99.52, श्रुति ने 99.52, द्वितिया गर्ग ने 99.51, मान्यु यादव ने 99.51, वंश ने 99.46, शुभम ने 99.46, विवान राव ने 99.42, विनय ने 99.42, लक्षिका ने 99.38, श्रेयांश रावत ने 99.38, अन्नु शर्मा ने 99.37,अभिनव व अमितानश ने 99.37, दिव्यम ने 99.35, दिपांशु ने 99.34, सिद्धार्थ ने 99.34,कशिश ने 99.33, मानस झा ने 99.32, योगेश कुमार व अंकित गौतम ने 99.29, गुलशन कुमार ने 99.29, मानव चैधरी ने 99.29, निखिल ने 99.26, रिजुल ने 99.20, प्रियांशु ने 99.19, मोहित यादव ने 99.15, रेनित राव ने 99.14, प्रियांशु ने 99.14, गौरव सांगवान ने 99.03, हिमेश ने 99.01, हरमित खुराना ने 99, समर्थ ने 99 व रितू यादव ने 99 परसेंटाइल अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। आरपीएस ग्रुप चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजी. मनीष राव एवं डिप्टी सीईओ कुनाल राव सहित ग्रुप के सभी विद्यालयों के प्राचार्यों ने अपने प्राध्यापकों के उचित मार्गदर्शन व बच्चों की कड़ी मेहनत तथा अभिभावकों के सहयोग की सराहना की। चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि एक ही ग्रुप के सबसे अधिक बच्चों ने जेईई मेन में अच्छी प्रसेंटाईल प्राप्त कर आरपीएस के साथ-साथ अपने जिले व प्रदेश का नाम गौरवांवित किया है।

महेंद्रगढ़। विजय चिह्न बनाकर खुशी जाहिर करती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

इंडोर कोर्ट, टेबल टेनिस हॉल, वीआईपी सिटिंग, लॉकर रूम जैसी सुविधा होगी

नारनौल शहर में बनेगा पहला अत्यधिक इंदौर स्पोर्ट्स कंपलेक्स, करीब 791 लाख रुपये की आएगी लागत

23 को विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव के समक्ष होगी प्रोजेक्ट की समीक्षा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नगर परिषद शहर के महता चौक के समीप अत्याधुनिक इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स बनाने जा रहा है। करीब 791 लाख रुपये की लागत से बनने वाले इस कॉम्प्लेक्स को लेकर 23 अप्रैल को विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव विकास गुप्ता के समक्ष इस प्रोजेक्ट की समीक्षा होगी। इसके बाद इसके निर्माण के बारे में प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इस प्रोजेक्ट से शहर के नागरिकों को इससे बहुत फायदा होगा। यह जानकारी देते हुए जिला नगर आयुक्त एवं अतिरिक्त उपायुक्त डा. आनंद कुमार शर्मा ने बताया कि तकरीबन एक साल में इसका निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि कुल 1670 वर्ग मीटर क्षेत्र में बनने वाला यह दो मंजिला भवन हर उम्र के खेल प्रेमियों के लिए एक वरदान साबित होगा। इस इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में दो मंजिला इमारत बनाई जाएगी। इसमें इंडोर कोर्ट, टेबल टेनिस हॉल, वीआईपी सिटिंग, कैफे, मेडिकल रूम, कोचिंग कैबिन, लॉकर रूम व महिला पुरुषों के लिए स्वच्छ टॉयलेट्स जैसी सुविधाएं होंगी।

नारनौल। शहर बनने वाले इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का डिजाइन।

निर्माण में पर्यावरण का रखा जाएगा पूरा ध्यानः एक्सईएन

नगर परिषद के एक्सईएन सुंदर श्योराण ने इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि पहली बार नारनौल में ऐसा स्पोर्ट्स हब बनने जा रहा है, जो खिलाड़ियों की शारीरिक, मानसिक और तकनीकी जरूरतों को एक ही छत के नीचे पूरा करेगा। इसकी सबसे खास बात यह है कि यह स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के निर्माण में पर्यावरण का पूरा ध्यान रखा गया है। पर्यावरण मानकों को ध्यान में रखते हुए सोलर एनर्जी, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग, वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया जाएगा।

सपना होगा हकीकत

नगर परिषद के एक्सईएन सुंदर श्योराण ने बताया कि स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स रेलवे स्टेशन से केवल 2.3 किमी व बस स्टैंड से 2.8 किमी दूर स्थित होगा और सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम से सिर्फ 750 मीटर दूरी पर है। ऐसे में इसकी पहुंच हर वर्ग के लोगों के लिए बेहद आसान होगी। नारनौल के युवाओं के लिए यह केवल एक इमारत नहीं, बल्कि एक सपना होगा जो हकीकत में बदलेगा। इस तरह का प्रोजेक्ट महेंद्रगढ़ में पहली बार बनेगा।